पंचम अध्याय

सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय–पंचम
सारांश एवं निष्कर्ष

भूमिका

विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिये योग्य शिक्षकों का होना आवश्यक है क्योंकि संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया के श्रृंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भारतीय समाज ने गुरू का सर्वोच्च स्थान है, क्योंकि वह शिक्षा के माध्यम से समाज को विकासोन्मुख बनाता है। यह तभी संभव होगा जब अध्यापकों में शिक्षण को प्रभावी बनाने की क्षमता हो तथा शिक्षक प्रभावी हो। प्रभाविता शिक्षक की शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। प्रभावी शिक्षण के बिना कक्षा में विद्यार्थियों को बांधे रखना कठिन है, विद्यार्थियों की अधिगम स्तर को प्रभावित करता है, शिक्षण द्वारा अधिगम होने पर बच्चों का संपूर्ण विकास हो इसके लिये शिक्षकों कोप्रयास करना होगा। शासकीय स्तर पर चाहे कितना ही मनोहर योजना बना ली जाये, किन्तु अध्यापक यदि उसे ठीक ढंग से कार्यान्वित न करें तो यह योजना कदापि सफल नहीं हो सकती। इसलिये अध्यापकों में शिक्षण के प्रति कर्तव्यनिष्ठ होते हुये शिक्षण को प्रभावित बनाने के प्रयास करते रहना है।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न जिलों में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता कितनी है। संविदा नियुक्त शिक्षकों का शिक्षण प्रभावी है या नहीं।

शीर्षक – छत्तीसगढ़ राज्य के विभिन्न जिलों के प्राथमिक विद्यालयों के संविदा शिक्षकों के शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य :–

- प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों ने लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों में अनुभव के आधार पर शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों में उम्र के आधार पर शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों में योग्यता के आधार पर शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन करना।
- क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर वैवाहिक स्थिति के आधार पर शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :-

- प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।
- प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों में अनुभव के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।
- प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों में उम्र के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।
- प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों में योग्यता के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।
- क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।
- प्राथमिक विद्यालय में वैवाहिक स्थिति के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श :-

प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के 19 जिलों में से सात जिलों के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के लिये चयनित किया गया, जिसमें 45 शिक्षकों एवं 25 शिक्षिकाओं को शामिल किया गयां 35 शहरी, 35 ग्रामीण क्षेत्र के प्रा. विद्यालय को शामिल किया

उपकरण एवं तकनीक :-

डॉ. प्रमोद एवं **डी.एन. माथुर** द्वारा निर्मित शिक्षक प्रभाविता परिसूची का उपयोग किया गया।

तकनीक :-

उपरोक्त 70 शिक्षकों का शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन के लिये डॉ. प्रमोद कुमार के शिक्षक प्रभाविता परिसूची का प्रमाण किया गया। अंकों की गणना द्वारा प्रतिशत के आधार पर की गयी। प्राप्त अंकों का मध्यमान एवं प्रामाणिक विचलन निकालकर t test (टी परिक्षण) ज्ञात किया गया।

चर – शोध समस्या में निम्न चर है।।

आश्रित चर – शिक्षण प्रभाविता

स्वतंत्र चर – लिंग, अनुभव, योग्यता, उम्र, वैवाहिक स्थिति, जाति।

मुख्य परिणाम :-

प्रस्तुत अध्ययन में शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया, जिनके आधार पर प्रदत्तों का विश्लेषण करके उनकी व्याख्या की गयी। परिकल्पना के आधार पर जो निष्कर्ष सामने आये व निम्न हैं :-

1. लिंग के आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। शिक्षक प्रभाविता शिक्षकों में स्त्री शिक्षकों की प्रभाविता पुरूष शिक्षकों की प्रभाविता के बराबर पाया गया है। शिक्षक प्रभाविता में लिंग का प्रभाव नहीं पाया गया।

2. अनुभव के आधार पर शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर पाया गया। शिक्षक प्रभाविता 5 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों ने 5 वर्ष से अधिक वाले शिक्षकों से अधिक है।

3. योग्यता के आधार पर शिक्षकों ने शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इस प्रकार शिक्षकों के शिक्षक प्रभाविता में योग्यता का प्रभाव देखने को नहीं मिला।

5. उम्र के आधार पर शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता 30 वर्ष से कम एवं 30 वर्ष से अधिक उम्र वाले शिक्षकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

6. शिक्षकों की वैवाहिक स्थिति आधार पर शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। शिक्षक विवाहित हो या अविवाहित इसका उनके प्रभावित से कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया।

सुझाव :-

1. माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में भी शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन कर सकते हैं।

2. शहरी, ग्रामीण आदिवासी विद्यालयों के शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन कर सकते हैं।

3. शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, अध्यापन की प्रभावशीलता विद्यालय की असर कारकता पर शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन कर सकते हैं।

4. शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन कर सकते हैं।

5. डाइट जैसी समस्याओं के शिक्षकों में शिक्षक प्रभाविता का अध्ययन कर सकते हैं।

6. दो राज्यों के विभिन्न जिलों में शिक्षकों के बीच शिक्षक प्रभाविता का [illegible]